Anusanadhan: A Multidisciplinary International Journal (In Hindi)
Volume 10, Issue 3&4 - 2025, Pg. No. 14-17
Peer Reviewed Journal

Review Article

मुन्शी प्रेमचंद की कहानियों में नारी विषयक अवधारणा का विश्लेषण।

Chaman Singh Thakur

Ph.D. Education M.A. Hindi M.A. Pol. Science M.A. Yoga M.ED. PGDHE

I N F O

E-mail Id:
Prof.chaman2019@gmail.com
Orcid Id:
https://orcid.org/0009-0003-3814-2995
How to cite this article:
मुन्शी प्रेमचंद की कहानियों में नारी विषयक अवधारणा का विश्लेषण।, Anu: a, Mul, Int, Jour, *2025*; 10(3&4): 14-17.

Date of Submission: 2025-10-28

Date of Acceptance: 2026-12-28

A B S T R A C T

मुंशी प्रेमचंद हिंदी साहित्य के युगप्रवर्तक कथाकार हैं, जिनकी रचनाओं में सामाजिक यथार्थ का गहन चित्रण मिलता है। उनकी कहानियों में नारी विषयक दृष्टिकोण अत्यंत महत्वपूर्ण है। प्रेमचंद ने नारी को केवल दया की पात्र न मानकर, उसे एक संघर्षशील, आत्मनिर्भर और आत्मसम्मान से युक्त मानव रूप में चित्रित किया है। उन्होंने समाज में स्त्रियों की स्थिति, उनके अधिकारों, उनकी भावनाओं और उनके शोषण को बहुत ही संवेदनशीलता से प्रस्तुत किया है। उनकी कहानियों की स्त्रियाँ कभी त्याग और बलिदान की मूर्ति हैं तो कभी विद्रोह और आत्मसम्मान की प्रतीक। "सेवासदन", "प्रेमाश्रम", "निर्मला", और "कफन" जैसी रचनाओं में नारी पात्रों के माध्यम से उन्होंने सामाजिक कुरीतियों, पितृसत्तात्मक व्यवस्था और स्त्री-शोषण पर करारा प्रहार किया है। यह शोधपत्र प्रेमचंद की कहानियों में चित्रित नारी विषयक अवधारणा का आलोचनात्मक विश्लेषण करता है और यह दर्शाता है कि वे अपने समय में स्त्री विमर्श के एक सशक्त प्रवक्ता थे।

मुख्य शब्द: मुंशी प्रेमचंद, नारी विषयक अवधारणा, हिंदी साहित्य, सामाजिक यथार्थ, स्त्री विमर्श, पितृसत्ता, शोषण, आत्मनिर्भरता, कहानियाँ, नारी चेतना

परिचय

भारतीय समाज में नारी की बदलती स्थिति: प्राचीन से आधुनिक युग तक

प्राचीन भारतीय समाज में नारी विषयक अवधारणा का अवलोकन करने पर ज्ञात होता है कि उस काल में कुछ बड़े घराने की नारियों को छोड़कर अधिकांशतः नारियों की स्थिति ठीक नहीं थी। उन्हें पुरुषों के समान विभिन्न क्षेत्रों में पूर्ण रूप से आजादी के साथ काम करने की स्वतंत्रता नहीं थी। इस प्रकार पुरुष प्रधान समाज की जंजीरों में जकड़ी नारी मुक्ति के लिए तड़प रही थी। तत्कालीन नारीवादी साहित्य के गहन अध्ययन से पता चलता है कि नारी घर और समाज में कैसे समायोजन कर जीने को मजबूर थी।

आधुनिक भारतीय नारी समाज में एक नए रूप में उभर कर सामने आई है। 21वीं सदी की नारी चार दीवारी में घुट-घुट कर जीने वाली दबी कुचली नारी नहीं है। आधुनिक युग की नारी समाज के विभिन्न क्षेत्रों में अपना बहुमूल्य योगदान दे रही है। भारत में आज नारी की एक ऐसी छवि है जिसने समाज के विभिन्न पहलुओं पर अपनी कार्यकुशता से गहरा प्रभाव डाला है। आज स्त्री की सामाजिक स्थिति में काफी सुधार हुआ है जिसका प्रभाव स्पष्ट रूप से नारियों के जीवन स्तर में आए सकारात्मक परिवर्तन के रूप में देखा जा सकता है। अब भारतीय नारी चारदीवारी तक सीमित नहीं रही बल्कि इसके संकुचित दायरे से बाहर निकलकर देश और विदेश में अपनी प्रतिभा का अद्‌भुत प्रदर्शन कर रही है। इसलिए नारी के प्रति आज सामाजिक दृष्टिकोण में बदलाव आया है।[1]

21वीं सदी की नारी सशक्त नारी है। वह पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलने वाली तथा राष्ट्र के निर्माण में पुरुषों के समान बहुमूल्य योगदान देने वाली नारी हैं।

Copyright (c) 2025: Author(s). Published by Advanced Research Publications

आज भारतीय नारी राष्ट्र निर्माण में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रही है। आधुनिक होती हुई भारतीय नारी अब समाज के किसी भी क्षेत्र में पीछे नहीं है। घरेलू हिंसा, शोषण, अत्याचार, यौन हिंसा तथा उत्पीड़न आदि विभिन्न समस्याओं से मजबूती के साथ लड़ती हुई भारतीय नारी आज निरंतर आगे बढ़ रही है। इन सभी समस्याओं से लड़ने के लिए आधुनिक नारी को अब किसी की आवश्यकता नहीं है। वह समस्त चुनौतियों का सामना करने में अब स्वयं सक्षम है।

आधुनिक कहानीकारों की कहानियों में नारी विषयक अवधारणा का यथार्थ चित्रण मिलता है। इन कहानीकारों ने अपनी सशक्त लेखनी के माध्यम से नारी की तत्कालीन स्थिति तथा सामाजिक जीवन में उभरती प्रतिकूल स्थितियों का अपनी रचनाधर्मिता से विभिन्न पात्रों के माध्यम से सजीव चित्रण किया है। इन कहानियों में रूढ़िवादी परम्पराओं तथा सामाजिक कुरीतियों का शिकार होती नारी की दयनीय स्थिति को बड़ी बेबाकी और साफ़गोई से प्रस्तुत किया गया है।[2]

मुंशी प्रेमचंद की कहानियों में नारी की पीड़ा, छटपटाहट और मुक्ति की आकांक्षा

मुन्शी प्रेमचंद की कहानियों में नारी की व्यक्तिगत, पारिवारिक तथा सामाजिक जीवन की तमाम समस्याओं का बड़ा सटीक तथा वास्तविक वर्णन हुआ है। इन कहानियों में नारी की अंतर्वेदना भी है और मुक्ति की कामना तथा छटपटाहट भी है, इनमें सामाजिक सम्मान और प्रतिष्ठा तथा स्वीकृति की अभिलाषा भी है और और उन्मुक्त गगन में उड़ने की चाह भी। इन कहानीकारों ने नारी के विभिन्न रूपों को विभिन्न पात्रों के माध्यम से प्रदर्शित करने का बहुत ही सफल प्रयास किया है। इनकी कहानियों में नारी की पीड़ा और चुनौतियों को बड़ी स्पष्टता से व्यक्त किया गया है। इन कहानियों में नारी विषयक अवधारणा को लेकर विभिन्न काल्पनिक पात्रों के माध्यम से नारी जीवन के अनछुए विभिन्न पहलुओं को पूरी प्रामाणिकता के साथ उद्घाटित किया गया है। नारीवादी कहानियों में विषय की गंभीरता भी है और नारी स्वभाव का स्वाभाविक एवं यथार्थ चित्रण भी। यदा - कदा यह दर्शाने का भी प्रयास किया गया है कि यदि नारी को शोषण, हिंसा आदि इन तमाम समस्याओं से मुक्ति पानी है तो उन्हें संघर्ष के रास्ते पर अग्रसर होना होगा, उन्हें अपनी आवाज को और अधिक बुलंद करना होगा। पुरुषवादी और पितृसत्तात्मक समाज की जकड़न से बाहर निकलने के लिए आतुर नारी की छटपटाहट को इन कहानीकारों की कहानियों में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।

मुंशी प्रेमचंद की कहानियों में समय और समाज से जूझती नारी के विभिन्न रूपों का सटीक चित्रण हुआ है। उदाहरण के लिए उनकी कहानी 'बड़े घर की बेटी' में एक ऐसी बेटी की मनस्थिति को दर्शाने का प्रयास कर रहे हैं जो कि अपने मायके में बहुत ही ऐश्वर्य पूर्ण जीवन जी चुकी है और विवाह के उपरांत उन सभी सुविधाओं के अभाव में विपरीत परिस्थितियों में भी समायोजन करने का प्रयास करती हुई दिखाई देती है। वह अपमान सहकर भी संयुक्त परिवार को टूटने से बचाती हुई नजर आती है। बड़े घर की बेटी कहानी के माध्यम से मुंशी प्रेमचंद तत्कालीन नारी की स्थिति का बड़ी बेबाकी से चित्रण करते हुए नजर आते हैं। कहानी में बेनी माधव सिंह कहते हैं कि बहू बेटियों का यह स्वभाव अच्छा नहीं कि यह पुरुषों के मुंह लगे और बेटा लाल बिहारी यह कहते हुए दर्शाया गया है[3] कि वह बड़े घर की बेटी है तो हम लोग भी कोई कुर्मी कहार नहीं है। इन पंक्तियों का विश्लेषण किया जाए तो यहाँ एक बात स्पष्ट नजर आती है कि तत्कालीन समाज में परिवार में किस तरह से पुरुष मानसिकता हावी रहती थी तथा घर में पुरुषों का कैसा वर्चस्व रहता होगा जहाँ नारी या घर की बहू अपने स्वाभिमान की रक्षा के लिए मुखर भी नहीं हो सकती और उसे अपने ही घर में विभिन्न परिस्थितियों में घुट - घुट कर जीना पड़ता था। इस प्रकार मुन्शी प्रेमचंद ने अपनी कहानियों के माध्यम से तत्कालीन नारी की मनःस्थिति और पीड़ा का वास्तविक वर्णन किया है। मुन्शी प्रेमचंद की इस कहानी में कहानी के पात्र लाल बिहारी की पंक्तियों से यहाँ साफ संदेश मिल रहा है कि उस समय समाज में जातिवादी सोच एवं संकीर्ण मानसिकता का भी कितना प्रभाव था।[4]

इसी प्रकार मुन्शी प्रेमचंद की एक और कहानी 'कफन' में एक निर्धन परिवार में जिम्मेदारियों का बोझ उठाती नारी आखिर प्रसव पीड़ा से कराहती हुई दम तोड़ देती है लेकिन घर के पुरुष दवा करने के बजाय मदिरापान कर झूमते हुए नज़र आते हैं जैसे उनको उस पीड़ा में तड़पती नारी की तनिक भी परवाह नहीं है। यह कहानी तत्कालीन नारी की उपेक्षा और बदहाली तथा उस घर के पुरुषों की असंवेदनशीलता एवं दूषित मानसिकता को दर्शाती है।[5]

मुन्शी प्रेमचंद की कहानियों में नारी विषयक अवधारणा का गहन समावेश हुआ है। मुंशी प्रेमचंद जहाँ बड़े घर की बेटी के माध्यम से समाज की तत्कालीन संरचना और संकुचित मानसिकता पर प्रहार करते हुए नजर आते हैं वही मुंशी प्रेमचंद पारिवारिक उहापोह तथा संयुक्त परिवार के बीच पनपते विद्रोह के स्वर तथा परिस्थितियों को भी उजागर करते हुए दिखाई पड़ते हैं। इस प्रकार जब मुंशी प्रेमचंद कफन कहानी के पात्रों के माध्यम से समाज और समाज में नारी का यथार्थ चित्रण करते नजर आते हैं तो कहानीकार एक ऐसे नारी पात्र के माध्यम से यह संदेश देना चाहते हैं जिसमें अत्यंत निर्धन परिवार में पारिवारिक जिम्मेदारियों का बोझ ढोती हुई नारी की मनोदशा को व्यक्त करते हुए पुरुषों की मौज-मस्ती और नारी के प्रति नकारात्मक मानसिकता को दर्शाने का प्रयास किया गया है। इस तरह की घटनाएंँ तत्कालीन समाज में नारी की सामाजिक एवं पारिवारिक स्थिति और विशेषकर नारी के संबंध में पुरुषों की संकुचित मानसिकता के बहुत ही भयावह रूप प्रकट करती है।

मुन्शी प्रेमचंद कफन कहानी के माध्यम से एक ऐसी नारी की दुर्दशा का यथार्थ चित्रण करते हुए नजर आते हैं जिसने जीवन भर पारिवारिक दायित्वों का बोझ उठाया और मरणोपरांत घर के पुरुष उसके कफन के लिए भी जुगाड़ बाजी करते हुए नजर आते हैं। इस प्रकार विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण से यहाँ समाज के एक बहुत ही वीभत्स रूप को प्रकट किया गया है। हद तो तब होती है जब माधव यह कहते हुए नजर आता है[6]

कि... "कैसा बुरा रिवाज है कि जिसे जीते जी तन ढकने को चिथड़ा भी ना मिले उसे मरने पर नया कफन चाहिए और कफन लाश के साथ जल ही तो जाता है और क्या रखा रहता है। यही पाँच रुपये पहले मिलते तो कुछ दवा दारू कर लेते" इस प्रकार मुंशी प्रेमचंद ने इन पंक्तियों के माध्यम से उस परिवार के पुरुषों की बहुत ही संकुचित, नकारात्मक एवं मलिन सोच को उजागर किया है।[7]

मुंशी प्रेमचंद की कहानियों में नारी की आर्थिक, सामाजिक एवं पारिवारिक स्थिति

मुन्शी प्रेमचंद की एक और महत्वपूर्ण कहानी 'पूस की रात' में हल्कू और मुन्नी पात्रों के माध्यम से तत्कालीन सामाजिक व्यवस्था और निर्धनता पर प्रकाश डाला है। "मुन्नी झाड़ू लगा रही थी पीछे फिर कर बोली - तीन रुपये हैं, दे दोगे तो कंबल कहाँ से आवेगा? माघ - पूस की रात हार मैं कैसे कटेगी? उससे कह दो, फसल पर दे देंगे, अभी नहीं।" इन पंक्तियों में गरीबी की मार झेल रही मुन्नी की भयावह ठण्ड से बचने की चिन्ता साफ नजर आ रही है। सामाजिक एवं आर्थिक विषमता के नग्न रूप को प्रदर्शित करते हुए मुन्शी प्रेमचंद गरीबी की हालत में नारी को मजदूरी करने के लिए बाध्य होने की स्थिति को चित्रित करने का प्रयास करते दृष्टिगोचर हो रहे हैं।

फसल के नष्ट होने की स्थिति में मुन्नी बहुत उदास नजर आती है " मुन्नी ने चिंतित होकर कहा - अब मजूरी करके माल गुजारी भरनी पड़ेगी। इस प्रकार इस कहानी में गरीबी से जूझते दाम्पत्य जीवन और नारी की सामाजिक स्थिति, बदहाली तथा अभावग्रस्ता को बड़ी ही स्पष्टता से चित्रित किया गया है। यहाँ पर नारी को पारिवारिक दायित्वों के निर्वहन के लिए पुरुष के समान चिंतित होते हुए दर्शाया गया है। उसे यह आभास है कि फ़सल के नष्ट हो जाने पर माल गुजारी कैसे भरी जाएगी और घर में दाल रोटी का जुगाड़ कैसे होगा। मुन्शी प्रेमचंद ने तत्कालीन समाज में निर्धन परिवार से सम्बंध रखने वाली नारी की कठिनाइयों के साथ - साथ सामाजिक व्यवस्था का बड़ी साफ़गोई से चित्रण किया है। उन्होंने दर्शाया है कि एक तो पूस की रात की भीषण ठण्ड और ऊपर से गरीबी तथा फसल का बरबाद हो जाना मुन्नी को परेशान किए जा रहा था जिसको लेकर वह बहुत चिंतित थी।[8]

मुंशी प्रेमचंद ने इस कहानी के माध्यम से यह भी कहने का प्रयास किया है कि नारी परिवार में खाना पकाने और अन्य जिम्मेदारियों तक ही सीमित नहीं रहती थी बल्कि वह पुरुषों के साथ कदम से कदम मिलाकर आगे बढ़ने और हर परिस्थिति का मिलजुल कर सामना करने के लिए भी तैयार रहती थी। इस प्रकार इस कहानी में मुन्नी जब यह देखती है कि सारी फसल नष्ट हो गई है तो वह बच्चों की देखभाल के साथ-साथ परिवार पर कर्ज के बोझ को भी स्पष्ट रूप से देख पाती है और जब कर्ज को चुकाने में स्वयं को असमर्थ पाती है तो चिंतित हो जाती है। इस प्रकार यहाँ नारी की असहाय स्थिति के साथ उसकी मनोदशा को अंकित करने का प्रयास किया गया है।

मुन्शी प्रेमचंद की कहानियों में 'बड़े घर की बेटी', 'पूस की रात' तथा 'कफन' आदि कहानियों में नारी विषयक अवधारणा का अध्ययन करने के पश्चात नारी की तत्कालीन स्थिति तथा सामाजिक जीवन का पता चलता है।[9] नारी की सामाजिक स्थिति और निर्धनता के साथ पारिवारिक दायित्वों के निर्वहन का एहसास कराती उनकी इन कहानियों में नारी की पीड़ा और टीस को बड़ी स्पष्टता से चित्रित किया गया है। मुन्शी प्रेमचंद की कहानियों में पुरुष प्रधानता के साथ - साथ सामाजिक व्यवस्था एवं विषमताओं को प्रमुखता से उजागर किया गया है। मुन्शी प्रेमचंद की कहानियाँ नारी के दैनिक जीवन और समाज में उसकी दयनीय स्थिति को बेबाकी से व्यक्त करती हुई दृष्टिगोचर होती है। इस प्रकार यह पुरुष प्रधान समाज के वीभत्स रूप को भी दर्शाता है जिसमें पुरुष येन केन प्रकारेण अपनी सार्थकता और सामाजिक वर्चस्व कायम रखना चाहता है और महिलाओं को पुरुषों के बराबर स्थान प्रदान करने की सोच के विपरीत व्यवहार करता है। मुन्शी प्रेमचंद सामाजिक सरोकार और विसंगतियों को अपनी कहानियों में प्रमुखता से व्यक्त करते हुए अपनी रचना को आगे बढ़ाते हैं। उनकी इन कहानियों में नारी की सामाजिक स्थिति और उनके पारिवारिक जीवन की झलक मिलती है। इसके साथ - साथ नारी की सकल समस्याओं को अलग-अलग पात्रों के माध्यम से दर्शाने का प्रयास किया गया है। इस प्रकार नारी अपने समक्ष खड़ी विभिन्न चुनौतियों का सामना करते हुए तथा बहुत कुछ सहन करते हुए कैसे पारिवारिक संतुलन स्थापित कर आगे बढ़ रही है,[10] यह इन कहानियों में स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होता है। उनकी कहानियों में नारी के प्रति चिन्ता और नारी की वास्तविक स्थिति का चित्रण यथार्थ रूप में हुआ है। मुन्शी प्रेमचंद की कहानियों में नारी विषयक अवधारणा का गहन अध्ययन करने के पश्चात निष्कर्ष रूप से यही कहना समीचीन होगा कि उनकी कहानियों में नारी की पीड़ा स्वत: मुखरित होती हुई दृष्टिगोचर होती है।

निष्कर्ष:

मुंशी प्रेमचंद की कहानियाँ नारी जीवन के विविध पक्षों को अत्यंत संवेदनशीलता, यथार्थवाद और गहराई के साथ प्रस्तुत करती हैं। उन्होंने नारी को केवल करुणा या भोग की वस्तु के रूप में नहीं देखा, बल्कि उसे समाज में एक सक्रिय, जागरूक और संघर्षशील व्यक्ति के रूप में चित्रित किया। प्रेमचंद की स्त्रियाँ सहनशील होने के साथ-साथ आत्मसम्मान, आत्मबल और निर्णय लेने की क्षमता से युक्त हैं। वे सामाजिक बंधनों, रूढ़ियों और पितृसत्तात्मक व्यवस्था से जूझती हैं और अपने अस्तित्व की खोज करती हैं।

उनकी कहानियों में नारी पात्र न तो एकदम आदर्शवादी हैं और न ही पूरी तरह विद्रोही, बल्कि वे जीवन के यथार्थ से जुड़ी हैं, जो परिस्थितियों से समझौता भी करती हैं और ज़रूरत पड़ने पर उसका विरोध भी। प्रेमचंद की दृष्टि में नारी केवल घर की शोभा नहीं, बल्कि समाज के निर्माण की आधारशिला है।

संदर्भ:

1. प्रेमचंद, मुंशी। मानसरवर (खंड 1 से 8)। लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
2. प्रेमचंद, मुंशी। निर्मला। लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
3. प्रेमचंद, मुंशी। सेवासदन। राजपाल एंड संज प्रकाशन।
4. शर्मा, रामविलास। प्रेमचंद और उनका युग। राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
5. नामवर सिंह। कहानी नई कहानी। राजकमल प्रकाशन।
6. चतुर्वेदी, नंदकिशोर। हिंदी कथा साहित्य में नारी विमर्श। भारतीय साहित्य संस्थान।
7. सिंह, डॉ. विद्या। प्रेमचंद की कहानियों में स्त्री चेतना। हिंदी बुक सेंटर, नई दिल्ली।
8. मिश्र, डॉ. अर्चना। प्रेमचंद की नारी दृष्टि। संवाद प्रकाशन, वाराणसी।
9. पाठक, डॉ. कैलाशचंद्र। हिंदी साहित्य में नारी का स्वरूप। साहित्य भवन, आगरा।
10. तिवारी, डॉ. रमा। स्त्री विमर्श और प्रेमचंद। प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली।